शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक ३३ : नई दिल्ली : १०-१६ नवम्बर २०१७

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण ने कोलकाता महानगर का चातुर्मासिक प्रवास सानंद संपन्न कर ससंघ 'महाश्रमण विहार' से मंगल विहार कर दिया। पूज्यप्रवर के प्रस्थान के समय श्रीचरणों में मंगलभाव अर्पित करने के लिए कोलकाता के श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ आया। आचार्यप्रवर के स्वागत में झलकने वाला जनता का उल्लास और उत्साह करीब पांच माह बाद भी यथावत नजर आया, किन्तु उस समय श्रद्धालुओं के हृदय में उमड़ने वाली प्रसन्नता का स्थान प्रस्थान के समय मायूसी ने ले लिया। इस प्रवास के दौरान आचार्यप्रवर द्वारा प्राप्त आध्यात्मिक ऊर्जा कोलकातावासियों के लिए जीवन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि और थाती बन गई।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण कोलकाता में

विजयी बनता है पराक्रमी

३० अक्टूबर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के जीवन में सत्त्व का बड़ा महत्त्व होता है। मनोबल, आत्मबल और साहस जीवन में होता है तो आदमी जीवन की कठिन परिस्थितियों में भी अडोल रह सकता है और यथासंभव अपने गंतव्य की ओर कदम आगे बढ़ा सकता है। उसके बिना आदमी कठिनाई आने पर वहीं रुक जाता है या पीछे हट जाता है। शास्त्रकारों ने मनोबल, आत्मबल और साहस के संदर्भ में पांच प्रकार के पुरुष बताए हैं--

१. ह्री सत्त्व-विकट परिस्थिति में भी लज्जावश कायर न होने वाला।
२. ह्री मनः सत्त्व-विकट परिस्थिति में भी मन में कायर न होने वाला। ह्रीसत्त्व और ह्रीमनःसत्त्व--इन दोनों में सत्त्व का आधार लोक-लाज है। कुछ लोग आन्तरिक सत्त्व के विचलित होने पर भी लज्जावश सत्त्व को बनाए रखते हैं, भय को प्रदर्शित नहीं करते। जो ह्रीसत्त्व होता है, वह लज्जावश शरीर और मन दोनों में भय के लक्षण प्रदर्शित नहीं करता। जो ह्रीमनःसत्त्व होता है, वह मन में सत्त्व को बनए रखता है, किन्तु उसके शरीर में भय के लक्षण-रोमांच, कंपन आदि प्रकट हो जाते हैं।
३. चल सत्त्व-अस्थिर सत्त्व वाला।
४. स्थिर सत्त्व-सुस्थिर सत्त्व वाला।
५. उदयन सत्त्व।

जिसमें पराक्रम, मनोबल, साहस होता है, वह विजयी बन सकता है। बाह्य साधनों के कम होने पर भी जिसमें मनोबल होता है, वह आदमी विजय को प्राप्त कर सकता है। आदमी को अपने भीतर यथासंभव निर्भीकता, पराक्रम, मनोबल, आत्मबल का विकास करने का प्रयत्न करना चाहिए। कल्याणकारी कार्यों को करते हुए विघ्न-बाधाएं आ सकती हैं, किन्तु उस समय घबराना नहीं चाहिए। उन्हें चीरते हुए आगे बढ़कर मंजिल पाने का प्रयास करना चाहिए।

भय के भाव को दूर करने के लिए कुछ प्रयोग करना चाहिए। जैसे--आगम का एक पाठ है-'णमो

जिणाणं जियमयाणं' जिसे ज्यादा भय लगे उसे एक वर्ष तक नाश्ते से पहले-पहले प्रतिदिन दस मिनट तक इसका यथासंभव जप करना चाहिए।

पूज्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के पश्चात 'राजा प्रदेशी' आख्यान शृंखला को आगे बढ़ाया। पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व कार्यक्रम में साध्वीवर्याजी का उद्बोधन हुआ।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित राजस्थान के राजस्वमंत्री श्री अमराराम चौधरी ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी धर्म की अलख जागते हुए मानव को सही रूप में मानव और महामानव बनाने के लिए यात्रा कर रहे हैं। आपके इस अभियान के लिए हम आपके ऋणी हैं। आपके द्वारा प्रज्वलित की जा रही ज्योति मानवता का पथ प्रदर्शित करती रहेगी।'

मारवाड़ जंक्शन के विधायक श्री केशाराम चौधरी ने कहा--'कोलकाता में चतुर्मास कर आचार्यश्री ने यहां पावन गंगा बहाई है। आप अपनी अहिंसा यात्रा के दौरान हजारों किलोमीटर की पैदल यात्रा कर जनता के कल्याण का पथ प्रशस्त कर रहे हैं। आप द्वारा दिए गए संदेश को अपनाकर विश्व शांति की राह को प्राप्त कर सकता है।'

जोजावर के ठाकुर चक्रवर्ती सिंह ने कहा--'आज मेरी प्रसन्नता पराकाष्ठा पर है कि मुझे तेरापंथ की तीन-तीन पीढ़ियों के साक्षात् दर्शन और सेवा का अवसर प्राप्त हुआ। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि विश्व में तेरापंथ धर्मसंघ का अनुशासन अद्वितीय है। आचार्यश्री ने लघु आयु में जो विराटता प्राप्त की है, वह अनिर्वचनीय है। अहिंसा यात्रा के द्वारा आपने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की क्रांति घटित की है। भीषण परिस्थितियों में भी आप इस राष्ट्र को नई दिशा दे रहे हैं।'

फालना से समागत श्री ओमप्रकाश आचार्य ने भी पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में गत २९-३० अक्टूबर को अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की वर्तमान कार्यसमिति के लिए 'उन्नयन' कार्यशाला का आयोजन हुआ। 'बी एनेर्जेटिक, बी पोजिटिव' विषय पर आधारित कार्यशाला में संभागी महिलाओं को महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी से प्रेरणा प्राप्त हुई। मुख्यनियोजिकाजी, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यात्मिक पर्यवेक्षक साध्वी कल्पलताजी, समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा, प्रधान न्यासी श्रीमती सायर बैंगानी, न्यासी श्रीमती शांता पुगलिया, पूर्व अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा बैंगानी, महामंत्री श्रीमती नीलम सेठिया आदि ने भी प्रशिक्षण दिया।

वस्त्रों से नहीं, गुणों से हो इंसान का महत्त्वांकन

३१ अक्टूबर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगामधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'साधना के क्षेत्र में साधु दो प्रकार की साधना करते हैं--सचेल और अचेल। कुछ साधु कपड़ा रखते हुए साधना करते हैं, वह सचेल साधना होती है और कुछ साधु कपड़ों के बिना साधना करते हैं, वह अचेल साधना होती है। पांच कारणों से अचेल साधना प्रशस्त होती है--

१. अल्प प्रतिलेखन- प्रतिलेखन में जाने वाले समय से अचेल मुनि बच सकता है।
२. लघुता- अचेल साधु उपकरणों की दृष्टि से हल्का रह सकता है, उसके अल्पोपाधि की साधना अच्छी हो सकती है।
३. रूप विश्वसनीयता- वस्त्रों से भ्रम भी हो सकता है कि पुरुष है या स्त्री। अचेल रूप में ऐसा संशय नहीं रहता।

४. अनुज्ञात तप- अचेल साधु सर्दी, मच्छर आदि को सहता है तो उसके भगवान की अनुज्ञा से अनुज्ञात तप होता है।

५. इन्द्रिय निग्रह- अचेल साधु के इन्द्रिय निग्रह अच्छा हो सकता है।

जिनकल्पी आदि मुनि अचेल अवस्था में रहते हैं। वस्त्र जीवन की एक अपेक्षा तो है, किन्तु वह अनिवार्य अपेक्षा नहीं है। आदमी को वृद्धावस्था में आभूषणों के भार से यथासंभव दूर रहना चाहिए। बाह्य आभूषणों की अपेक्षा आन्तरिक आभूषणों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए। साधक के लिए यह ध्यातव्य है कि यदि वह वस्त्र पहनता है तो उसमें सादगी कितनी है। आदमी का महत्त्व कपड़ों से नहीं, गुणों से आंका जाना चाहिए। साधारण कपड़े वाले व्यक्ति में भी यदि ज्ञानवत्ता और चरित्रशीलता हो तो वह बहुत महत्त्वपूर्ण हो सकता है।'

पूज्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के उपरान्त 'राजा प्रदेशी' आख्यान शृंखला के अंतर्गत राजा प्रदेशी और कुमारश्रमण केशी के बीच हुई चर्चा का वर्णन किया। कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व साध्वीवर्याजी का उद्‌बोधन हुआ।

आज पश्चिम बंगाल के फायर सर्विसेज के डीजी श्री जगमोहनजी, पश्चिम बंगाल के सरकारी अधिवक्ता श्री संजय वसु, पश्चिम बंगाल के अभिनेता श्री प्रसन्नजीत ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन मार्गदर्शन प्राप्त किया।

महाव्रतों की रक्षक हैं समितियां

१ नवम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'साधु के जीवन में पांच महाव्रतों की सुरक्षा करना महत्त्वपूर्ण कार्य होता है। इसके लिए समितियों-गुप्तियों की व्यवस्था है। समितियां पांच और गुप्तियां तीन होती हैं। समिति का अर्थ है सम्यक् प्रवृत्ति। समितियां पांच हैं--

१. ईर्या समिति-- युग प्रमाण भूमि को देखते हुए चलना। यह साधु के चलने की विधि है। ईर्या समिति से अहिंसा की साधना तो होती ही है, दृष्टि संयम भी इससे हो सकता है। साधु को इन्द्रिय विषयों और स्वाध्याय का वर्जन करते हुए तथा गति में तन्मय व दत्तचित्त होकर चलना चाहिए।

२. भाषा समिति। आदमी को बोलने में संयम और विवेक रखना चाहिए। कौन सी बात कहनी और कौन-सी बात नहीं कहनी यह विवेक होना चाहिए। किसीको अवांछनीय रूप में बदनाम करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। साधक को अनावश्यक नहीं बोलना चाहिए। वाणी में क्रोध, लोभ, भय और हास्य तथा सावद्य भाषा का वर्जन करना चाहिए। किसी पर झूठा आरोप नहीं लगाना चाहिए।

३. एषणा समिति। साधु के लिए बना हुआ भोजन साधु को नहीं लेना होता। इस प्रकार गोचरी के संदर्भ में अनेक नियम हैं, साधु को उन नियमों का यथोचित जागरूकता से पालन करना चाहिए। मनोज्ञ भोजन की प्रशंसा और अमनोज्ञ भोजन की निंदा नहीं करनी चाहिए। साधु को गवेषणा, ग्रहणैषणा और परिभोगैषणा में जागरूक रहना चाहिए।

४. आदान निक्षेप समिति। वस्त्र-पात्र आदि लेते व रखते समय अहिंसा का ध्यान रखना चाहिए।

५. उत्सर्ग समिति। मल, मूत्र आदि के विसर्जन में यथासंभव जीव हिंसा से बचने का प्रयास करना चाहिए।

पांच समितियों का ध्यान रखा जाए तो साधुपन में निर्मलता रह सकती है। ये पांच समितियां महाव्रतों की रक्षक हैं। इन्हें और गुप्तित्रय मजबूत रखा जाएगा तो संयम सुरक्षित रह सकेगा।'

पूज्यप्रवर ने 'राजा प्रदेशी' आख्यान शृंखला के अंतर्गत कुमारश्रमण केशी और राजा प्रदेशी के बीच हुई चर्चा के वर्णन क्रम को आगे बढ़ाया। पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व कार्यक्रम में साध्वीवर्याजी का उद्‌बोधन हुआ। हिन्दमोटर तेरापंथी सभा द्वारा प्रकाशित अपने क्षेत्र की तेरापंथ निर्देशिका सभा के पदाधिकारियों आदि द्वारा पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित की गई। श्री तपन चक्रवर्ती ने गीत का संगान कर अपनी नवीन सीडी 'वन्दना' और 'गुरुदेव मेरे आधार' का लोकार्पण किया।

मृत्यु का होना निश्चित, कब होना प्रायः अनिश्चित

२ नवम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'जब मृत्यु होती है, तब आत्मा के प्रदेश शरीर से बाहर निकलते हैं। आस्तिक विचारधारा में पुनर्जन्म मान्य है, जबकि नास्तिक विचारधारा पुनर्जन्म को नहीं मानती। आस्तिकवादी विचारधारा के अनुसार आत्मा पहले भी थी, आज भी है और आगे भी रहेगी, इसलिए आदमी को आत्मोद्धार के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

आत्मा प्रदेशों के शरीर से निर्गमन के पांच विकल्प हैं--पैर से, ऊरु (घुटने से ऊपर का भाग), हृदय से, सिर से और सभी अंगों से। आत्मा के निर्गमन के विकल्प से अगली गति का अनुमान भी किया जा सकता है। पैरों से निर्याण करने वाला जीव नरकगामी होता है। ऊरु से निर्याण करने वाला जीव तिर्यक्‌गामी होता है। हृदय से निर्याण करने वाला जीव मनुष्यगामी होता है। सिर से निर्याण करने वाला जीव देवगामी होता है और सारे अंगों से निर्याण करने वाला जीव सिद्धगति में पर्यवसित होता है।

प्राणी आगे कहां पैदा होगा, इसका निर्णय वर्तमान जीवनकाल में हो जाता है। अर्थात् मृत्यु से पहले-पहले अगली गति का निर्णय हो जाता है। अगली गति के निर्णय में छह बातों का निर्णय होता है--

१. जाति- प्राणी की अगली जाति क्या होगी? अर्थात् वह एकेन्द्रिय, द्विन्द्रिय, त्रिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय में से क्या बनेगा?
२. गति- प्राणी की अगली गति क्या होगी अर्थात् वह नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देव गति में से वहां उत्पन्न होगा।
३. स्थिति- प्राणी का अगला जीवनकाल कितना लम्बा होगा?
४. अवगाहन- प्राणी औदारिक शरीर में पैदा होगा या वैक्रिय शरीर में?
५. प्रदेश-आयुष्य के प्रदेशों (परमाणुओं) का संचय कितनी मात्रा में होगा?
६. अनुभाग-आयुष्य के परमाणुओं का विपाक किस रूप में होगा?

आदमी को यह ध्यान देना चाहिए कि उसका आयुष्य अधोगति का न बंधे। आयुष्य कितना है, यह पता लगाना मुश्किल होता है, अतः यह भी जानना मुश्किल होता है कि आयुष्य का बंध कब होगा? इस प्रकार मृत्यु का होना निश्चित है, किन्तु कब होना प्रायः अनिश्चित है। अतः आदमी को सदैव कदाचार से दूर रहकर सन्मार्ग पर चलने का प्रयत्न करना चाहिए। गृहस्थ जीवन में पूर्णतया साधना न हो सके तो बड़े पापों से तो बचने का प्रयास करना ही चाहिए। जैसे--किसी की हत्या, भ्रूणहत्या, अतिगुस्सा, अति कलह, अतिझूठ आदि से बचने का यथासंभव प्रयत्न करना चाहिए। पैसे के प्रति ज्यादा मोहासक्ति नहीं रखनी चाहिए। पैसे का घमंड नहीं करना चाहिए। आदमी को सन्मार्ग पर चलना चाहिए। पाप के मार्ग से बचने का प्रयास करना चाहिए। आदमी को अगली गति पर ध्यान देकर अपनी साधना को उच्च, उच्चत्तर और उच्चतम बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। हल्की आत्मा ऊर्ध्वगमन करती है, जबकि पाप कर्मों से भारी आत्मा अधोगति को प्राप्त होती है।

पूज्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् 'राजा प्रदेशी' आख्यान शृंखला के अंतर्गत राजा प्रदेशी द्वारा आस्तिक विचारधारा तथा धर्म को स्वीकार करने का वर्णन किया। पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व कार्यक्रम में साध्वीवर्याजी का उद्‌बोधन हुआ।

पुरस्कार समर्पण समारोह

आज के कार्यक्रम के दौरान पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में जैन विश्व भारती द्वारा सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. नरेन्द्र कोहली को आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के उत्तर भारत संघचालक व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ. बजरंगलाल गुप्ता को सन् २०१३ का प्रज्ञा पुरस्कार अर्पित करने का उपक्रम भी रहा। इस संदर्भ में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री रमेश बोहरा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कवि और साहित्यकार श्री राजेश 'चेतन' ने अपने विचार व्यक्त किए। आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार के प्रायोजक सूरजमल सुराणा चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से श्रीमती गुलाबदेवी सुरणा तथा प्रज्ञा पुरस्कार के प्रायोजक परिवार श्री उम्मेदसिंह विनोदसिंह दूगड़ की ओर से श्री मनोज नाहटा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों आदि ने स्मृति चिन्ह तथा पुरस्कार राशि एक लाख रुपए का चेक प्रदान कर डॉ. नरेन्द्र कोहली को सन् २०१६ का आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार तथा डॉ. बजरंगलाल गुप्ता को सन् २०१३ का प्रज्ञा पुरस्कार समर्पित किया।

आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार से सम्मानित सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. नरेन्द्र कोहली ने अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा--'मैंने जब पहली बार छत्तरपुर दिल्ली में आचार्यश्री के दर्शन किए थे, मैंने आपको साहित्य और अध्यात्म के संगम के रूप में देखा था। मुझे लगता है कि यह एक ऋषि प्रवृत्ति है कि ऋषि हमें साहित्य भी देता है और अध्यात्म भी देता है। इन दोनों चीजों को परस्पर एक दूसरे के निकट लाने के लिए आचार्यश्री ने जो प्रयत्न किया है, उसके लिए मैं नतसिर हूं। जब हम लोग विद्यार्थी थे, आचार्य महाप्रज्ञजी की पुस्तकें पढ़ा करते थे। उनसे मिलकर के बहुत गंभीर वार्ता तो कभी नहीं हुई, लेकिन चर्चाएं अनेक प्रकार हुईं। उन दिनों वे आगमों का कार्य कर रहे थे। मैंने कहा था कि आप जो काम कर रहे हैं, वह बहुत महत्त्वपूर्ण है, बहुत परिश्रम का है, श्रमसाध्य है और बहुत लंबा है।

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जैसे हमारे अध्यापक हैं, गुरु हैं, जो हमें हमारी सभ्यता और संस्कृति को और अधिक उन्नत बनाने के लिए प्रेरणा और पथदर्शन देते हैं। आचार्यश्री की वाणी में साधना का प्रभाव है, इसलिए आपका हर एक शब्द मंत्र जैसा बन जाता है।'

प्रज्ञा पुरस्कार से सम्मानित राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के उत्तर भारत क्षेत्र के संघ चालक डॉ. बजरंगलाल गुप्ता ने कहा--'प्रज्ञा पुरस्कार के लिए मेरे नाम का चयन हुआ है, यह सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ, क्योंकि मुझमें प्रज्ञा नहीं है। मैं इस पुरस्कार को आचार्यश्री के आशीर्वाद के प्रसाद और जैन विश्व भारती के मेरे प्रति स्नेह के रूप में स्वीकार कर रहा हूं। प्रज्ञा सामान्य बुद्धि का नाम नहीं, अपितु विशिष्ट प्रकार की बौद्धिक क्षमता का नाम है। इस पुरस्कार के माध्यम से आचार्यश्री अपनी प्रज्ञा को जागृत करने की प्रेरणा दे रहे हैं, ऐसा मैं मानता हूं। आचार्यश्री अपनी अहिंसा यात्रा के दौरान सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश दे रहे हैं, उसे आत्मसात् कर इंसान सही अर्थों में इंसान बन सकता है।

इस अवसर पर मुझे पुरस्कार स्वरूप जो राशि दी गई है, मैं जैन विश्व भारती से अनुरोध करुंगा कि इस राशि का उपयोग जैन विश्व भारती में अध्ययन-अनुसंधान में रत विद्यार्थियों के लिए करें, जो साधन के अभाव में कार्य नहीं कर पा रहे हैं। यह राशि उनको समर्पित होगी तो मैं बहुत आनंद का अनुभव करूंगा।'

आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'अभी जो पुरस्कार समर्पण का उपक्रम रहा। जैन दर्शन के अनुसार प्रज्ञा ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय के साथ जुड़ा हुआ तत्त्व है। प्राणियों के पास अनंत ज्ञान है, पर छद्मस्थ अवस्था में वह प्रायः आवृत रहता है। जब वह ज्ञान पूर्णतया अनावृत हो जाता है, संपूर्ण सूर्य की तरह वह सामने आ जाता है। प्रज्ञा, मति ऐसे तो कोष में एकार्थक बताए गए हैं। सूक्ष्मता में जाएं तो प्रज्ञा को एक उच्च स्थान दिया जा सकता है।

आज कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी है, आचार्य महाप्रज्ञजी का 'महाप्रज्ञ अलंकरण' दिवस है। प्रज्ञा शब्द कुछ महाप्रज्ञ से भी जुड़ा हुआ है। डॉ. बजरंगलाल गुप्ताजी को यह प्रज्ञा पुरस्कार दिया गया है। ये हमारे धर्मसंघ से बहुत जुड़े हुए व्यक्ति हैं। साहित्य पुरस्कार नरेन्द्र कोहली को दिया गया है। ज्ञानावरणीय कर्म का विलय होने से साहित्यिक प्रतिभा उभर सकती है। इसके द्वारा कितनों-कितनों को संबोध प्रदान किया जा सकता है, कितनों का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। साहित्य की गहराई में जाकर भीतर की स्फुरणा से किसी बात को प्रकट करने का विशेष महत्त्व होता है। प्रज्ञा व साहित्य महत्त्वपूर्ण चीजें हैं। दोनों सम्मान प्राप्तकर्ता महानुभाव अपनी आत्मा को अध्यात्म की ओर, अंतर्मुखता की ओर बढ़ाते रहें और पुरस्कार प्रदानकर्ता संस्था परिवार भी खूब अध्यात्म की ओर आगे बढ़ें। ऐसे ज्ञान सम्पन्न व्यक्तित्वों से समाज, राष्ट्र को व दुनिया को अच्छा बोध मिलता रहे। मंगलकामना।'

पारस चैनल के ऑनर श्री प्रकाश मोदी ने कहा--'सन् २०११ में हमने आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रवचनों का प्रसारण पारस चैनल पर प्रारम्भ किया। विश्व के १७२ देशों में पारस चैनल का प्रसारण होता है। मैं गर्व के साथ यह बताना चाहूंगा कि कुछ दिनों पहले हमने जब हमारे चैनल के सभी कार्यक्रमों की टीआरपी निकालवाई तो पता चला कि प्रातः ७.३५ से ८.०५ बजे के बीच प्रसारित होने वाले आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रवचनों की टीआरपी संपूर्ण जैन समाज में सबसे ज्यादा है।'

जैन विश्व भारती के न्यासी श्री मनोज लूणिया ने अमृतवाणी शिविर कार्यालय के उपयोग हेतु एक वाहन अमृतवाणी को समर्पित किया। इस संदर्भ में अमृतवाणी के न्यासी श्री रतन दूगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। पुरस्कार समारोह आदि उपक्रमों का संचालन अमृतवाणी के अध्यक्ष श्री सुखराज सेठिया ने किया।

हर प्राणी में है ज्ञान का प्रकाश

३ नवम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'ज्ञान एक शाश्वत चीज है। संसार में ऐसा कोई भी जीव नहीं है, जिसमें किसी भी रूप में कोई बोध न हो। छोटे से छोटे जीव में भी किसी रूप में बोधात्मक प्रकाश रहता है। तात्त्विक भाषा में 'अज्ञान' के दो प्रकार हैं--ज्ञान और अज्ञान। ज्ञानवरणीय कर्म के उदय से जो अज्ञान होता है, वह ज्ञान के अभाव रूप में होता है। मिथ्या दृष्टि का बोध भी अज्ञान होता है, वह क्षायोपशमिकभाव जन्य अज्ञान है। पांच ज्ञान बताए गए हैं--अभिनिबोधिक ज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययव ज्ञान और केवल ज्ञान। प्रथम तीन जो ज्ञान हैं, वे सम्यक्दृष्टि के पास हैं तो वे 'ज्ञान' संज्ञा और मिथ्यादृष्टि के पास हैं तो 'अज्ञान' संज्ञा वाले होते हैं। अंतिम दो ज्ञान मिथ्यादृष्टि के नहीं होते। प्रथम दो ज्ञान परोक्ष हैं, और अंतिम तीन ज्ञान प्रत्यक्ष हैं। जो ज्ञान चक्षु आदि उपकरणों की अपेक्षा रखता है, वह परोक्ष ज्ञान है। प्रत्यक्ष ज्ञान में इन्द्रियों आदि की सहायता अपेक्षित नहीं होती।'

पूज्यप्रवर ने हाजरी वाचन के संदर्भ में उपस्थित साधु-साध्वियों को संबोधित करते हुए कहा--'हमारे पास अभी दो ज्ञान हैं--मति और श्रुत। हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि हम श्रुत का विकास करें। क्योंकि

ज्ञान अपने आप में एक प्रकाश होता है, अज्ञान अंधकार होता है। आगम स्वाध्याय तो साधु-साध्वियों की खुराक है। जिन साधु-साध्वियों ने दसवेआलियं आदि आगम कंठस्थ किए हैं, उन्हें उन आगमों को यथासंभव भूलना नहीं चाहिए, उनका यथासंभव चितारना करते रहना चाहिए।'

चतुर्दशी के संदर्भ में पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन किया। तत्पश्चात् साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र उच्चरित किया। आचार्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व कार्यक्रम में साध्वीवर्याजी का उद्बोधन हुआ।

शासनश्री साध्वी शुभवतीजी का प्रयाण

अहमादाबाद में प्रवासित शासनश्री साध्वी शुभवतीजी का ३१ अक्टूबर को प्रयाण हो गया। उनके संदर्भ में उद्गार व्यक्त करते हुए पूज्यप्रवर ने कहा--'प्राप्त जानकारी के अनुसार साध्वी शुभवतीजी संसारपक्ष में सिसाय के अग्रवाल-जैन परिवार से संबद्ध थीं। वि.सं. २०१० में करीब बीस वर्ष की अवस्था में उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव तुलसी से साध्वी दीक्षा स्वीकार की। मुनि जिनदासजी उनके संसारपक्षीय भाई हैं। साध्वी शुभवतीजी ने दीक्षा के बाद स्नातकोत्तर के समकक्ष संघीय पाठ्यक्रम का अध्ययन किया। वे करीब बयालीस वर्षों तक साध्वी किस्तूरांजी (लाडनूं) की सहवर्ती के रूप में रहीं। साध्वी किस्तूरांजी प्रयाण के उपरान्त परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने उन्हें अग्रगण्य नियुक्त किया। सिलीगुड़ी मर्यादा महोत्सव के अवसर पर मैंने उन्हें 'शासनश्री' के रूप में संबोधित किया। वि.सं. २०७४ कार्तिक शुक्ला एकादशी को रात्रि करीब ९.४६ बजे तिविहार अनशनपूर्वक वे कालधर्म को प्राप्त हो गईं। पिछले अर्से में वे काफी अस्वस्थ थीं। उनकी सहवर्ती साध्वियों को भी सेवा का अवसर प्राप्त हुआ। साध्वी शुभवतीजी की आत्मा उत्तरोत्तर आध्यात्मिक प्रगति करती रहे, मंगलकामना।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने इस संदर्भ में कहा--'संघ का अपना महत्त्व होता है। जो व्यक्ति संघबद्ध साधना करते हैं, वे महत्त्वपूर्ण बन जाते हैं। साध्वी शुभवतीजी महासतियांजी दीक्षित होकर संघ में आईं और शासन गौरव साध्वी किस्तूरांजी के साथ रहीं। उनके साथ उन्होंने सुदूर प्रदेशों की बहुत लंबी-लंबी यात्राएं कीं। वे बहुत सहज और सरल थीं, लेकिन साध्वीश्री किस्तूरांजी महासतियांजी की विशेष कृपापात्र थी। उनकी कृपा से ही साधु जीवन स्वीकार कर इतना अध्ययन किया और अध्ययन करने के बाद उनकी सेवा में रहीं। साध्वीश्री किस्तूरांजी का एक दुर्घटना में स्वर्गवास हुआ। वह एक विचित्र घटना थी। उसके बाद गुरुदेव ने उन्हें 'शासन गौरव' संबोधन से संबोधित किया। यह एक संयोग ही मानना चाहिए कि साध्वीश्री किस्तूरांजी के साथ जितनी भी साध्वियां थीं, आचार्यवर ने कृपा कर सबको अग्रगण्य बनने का मौका प्रदान किया। साध्वी शुभवतीजी पिछले समय से काफी अस्वस्थ थीं। आचार्यवर ने उनको अस्वस्थता में चिकित्सा के लिए अहमदाबाद में रखा। उनकी वहां चिकित्सा हुई। साध्वियों ने उनकी खूब सेवा की, लेकिन आयुष्य को कोई बढ़ा नहीं सकता और उन्होंने अपनी संयम यात्रा पूरी की। यह तो एक प्रकार से सौभाग्य की बात है कि जो पांच महाव्रतों का भार उठाया था, उस भार को उन्होंने गुरु चरणों में सानंद संपन्न कर दिया। वे अपनी जीवनयात्रा संपन्न कर पधार गईं, अब उनका भावी जीवन वीतरागता की दिशा में अग्रसर होता रहे, यही उनके प्रति मंगलकामना है।'

पूज्यप्रवर के साथ चतुर्विध धर्मसंघ ने शासनश्री साध्वी शुभवतीजी की स्मृति में चार लोगस्स का ध्यान किया।

कोलकाता चतुर्मास का अंतिम दिन

४ नवम्बर। कार्तिक पूर्णिमा। कोलकाता महानगर के पावस प्रवास का चरम दिन। सूर्योदय के पश्चात् महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि ने पूज्यप्रवर को वंदन कर चातुर्मासिक क्षमायाचना की। पूज्यप्रवर ने भी साध्वियों से खमतखामणा किए। तदुपरान्त साधु-साध्वियों के बीच पारस्परिक खमतखामणा का भी उपक्रम रहा।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान मंगलभावना समारोह का दूसरा चरण समायोजित हुआ। कार्यक्रम में प्रवास व्यवस्था समिति से संबद्ध महिला कार्यकर्त्रियों ने मंगलभावना गीत का संगान किया। कोलकाता प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री कमलकुमार दुगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति के द्वारा पूज्यचरणों में आस्थासिक्त मंगल भाव व्यक्त किए।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'कोलकातावासियों का सपना साकार हुआ। कोलकाता के उपनगरों में अमृत बरसाते हुए आचार्यप्रवर का राजरहाट के इस 'महाश्रमण विहार' में पधारना हुआ और इसका रंग खिल उठा। लोगों में कितनी खुशियां थीं, किन्तु इसी 'महाश्रमण विहार' में आज लोगों के मन उदास हैं। कितने-कितने लोग यहां चार माह रहे तो कितने-कितने लोग सुबह चार बजे आचार्यप्रवर की सन्निधि में पहुंच जाते थे। अब उन्हें लग रहा है कि हम क्या करेंगे। आचार्यप्रवर स्वयं की साधना करते हुए परोपकार के लिए बहुत पुरुषार्थ करते हैं। इसलिए लोग आपके पास दौड़े-दौड़े आते हैं। आचार्यश्री ने पूरा जीवन परोपकार के लिए समर्पित कर दिया है। आचार्यश्री के सान्निध्य से आदमी जीने की कला सीख सकता है। आचार्यप्रवर ने एक आगम के माध्यम से जीवन के कितने-कितने रहस्य बताए हैं। अपेक्षा है उन रहस्यों को अच्छी तरह आत्मसात कर कोलकातावासी अपने जीवन को उन्नत बनाएं।

कोलकातावासियों को आचार्यप्रवर की कृपा से साधु-साध्वियां का प्रवास मिलता रहता है, किन्तु आचार्यों का चतुर्मास २५० से ज्यादा वर्ष हो जाने के बाद भी दूसरी बार मिला है। अब लोग यह पूछते हैं कि आचार्यप्रवर पुनः कब पधारेंगें। लोग चाहते हैं कि आचार्यश्री जल्दी-जल्दी पधारें, लेकिन यह जानते हैं कि हमारे देश के कितने-कितने शहरों और गावों के लोग चाहते हैं कि आचार्यश्री हमारे शहर में पधारें, चतुर्मास करें, तो आपकी बारी कब आए। विदेशी लोग भी चाहते हैं कि आचार्यश्री आएं, किन्तु कुछ सीमाएं हैं। कोलकातावासी आचार्यश्री से जो मिला है उसे अपने दिल में सहेज कर रखें। आचार्यश्री आपके दिलों में तो हैं ही, आचार्यश्री के उपदेशों को भी दिलों में स्थापित करें। दिलों में स्थापित करने का अर्थ है कि आप अपना जीवन उनके अनुरूप बनाने की कोशिश करें, जीना शुरू करें। आचार्यवर के उपदेशों के अनुरूप जन-जन के अंतःकरण में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की मशालें जगमगा उठीं तो यह धरती अपने आप में स्वर्ग बन जाएगी।

परम पूज्य आचार्यवर ने 'महाश्रमण विहार' को क्या बना दिया, उसके लिए उपयुक्त शब्द नहीं मिल रहा है। केवल तेरापंथी, जैन ही नहीं आचार्यप्रवर के पावन आभामंडल में यहां दूसरे-दूसरे समाज के लोग, सरकारी क्षेत्रों से जुड़े लोग, अन्य वर्णों से जुड़े लोग भी यहां आकर मुग्ध हो जाते हैं। यहां के वातावरण से उन्हें कुछ अलग चीज मिलती है, क्योंकि वातावरण में अध्यात्म घुला हुआ है, जिसका स्पर्श ही उनके मन को मुग्ध कर देता है।

आज आप सभी आचार्यवर की आगामी यात्रा के प्रति मंगल कामना कर रहे हैं। आप सभी की मंगल भावना आचार्यवर की यात्रा में और नए उन्मेष खोलती है। कोलकाता मेरी जन्मभूमि है तो मैं भी अपनी जन्मभूमि पर अपने आराध्यदेव के चरणों में उनकी भावी यात्रा के प्रति यह मंगलकामना करती हूं--

हर नई राह, हर नई चाह, हर नया गीत, तुम्हें शुभ हो।
हर नया प्रात, हर नई रात, पावन पुनीत तुम्हें शुभ हो।।

रमणीय बने रहें

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित प्रवचन शृंखला की अंतिम कड़ी प्रस्तुत करते हुए कहा--'ज्ञान वृद्धि का एक साधन है स्वाध्याय। आदमी जितना स्वाध्याय, अध्ययन करता है, उसका ज्ञान उतना वृद्धिंगत होता है, पुष्ट होता है। जैन शासन में श्रुत को महत्त्व दिया गया। स्वाध्याय से आदमी को आलोक मिलता है।

स्वाध्याय के पांच प्रकार हैं--'वाचना, प्रच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा और धर्मकथा। इनका सम्यक् अनुशीलन होता है तो ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ा जा सकता है। इनके साथ आदमी में प्रतिभा भी होनी चाहिए। प्रतिभावान ज्ञान प्राप्ति का यत्न करता है तो वह ज्यादा विकास कर सकता है। जिनमें ज्यादा प्रतिभा नहीं, किन्तु वे साधना, संयम आदि में अपने समय का नियोजन करते हैं, वे भी आगे बढ़ सकते हैं।'

चतुर्मास परिसम्पन्नता के संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कहा--'यह प्रांगण जिसे 'महाश्रमण विहार' कहा जाता है, प्रवचन पंडाल इससे जुड़ा हुआ है, मानों एक स्वाध्याय भूमि बन गया है। इस प्रांगण में कितना प्रवचन-व्याख्यान हुआ है, दिन-रात में कितनी बार होता रहा है। इतनी चारित्रात्माओं फिर समणश्रेणी और श्रावक-श्राविकाओं के द्वारा कितना स्वाध्याय चला है। शनिवार की सायं को मैं जहां बैठता, उसके आसपास कितने श्रावक-श्राविकाओं के द्वारा सामायिक की स्थिति में तेरापंथ प्रबोध का संगान और स्वाध्याय होता।

चतुर्मास का समय सम्पन्नता की ओर है। चातुर्मासिक पक्खी हो ही गई है और आज पूर्णिमा का दिन, जो अभी वर्तमान है, कभी यह भी अतीत होने वाला है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने कोलकाता में चतुर्मास किया था। हम यूं कहें कि हमने तो परम पूज्य गुरुदेव तुलसी की चतुर्मास भूमि में पुनरावृत्ति की। उन्होंने तो शहर में चतुर्मास किया और हमने शहर के कुछ बाहरी भाग में किया। वैसे आगम में वर्णन आता है कि भगवान महावीर शहर के बाहर विराजा करते थे। किसी रूप में हमें भी भगवान महावीर का अनुकरण करने का मौका मिल गया।

चतुर्मास की व्यवस्था भी एक भारी काम होता है। व्यवस्थाओं को अंजाम देने के लिए कितना समय लगाना पड़ता है। कितने-कितने लोग लगते हैं, तब चतुर्मास का ऐसा सुन्दर प्रबन्धन हो सकता है। कुल मिलाकर चतुर्मास अच्छा सम्पन्न हो रहा है।

साध्वीप्रमुखाजी भी इतनी दूर पधारी हैं। आपका अपना वैदुष्य और कौशल है। चतुर्मास में हमारा और साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों के प्रवास स्थल पास-पास थे। बहुत नैकट्य में साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों का प्रवास रहा। वर्षा आई कुछ भी आया, लेकिन साध्वीप्रमुखाजी से हमारा रोज मिलना हो गया।

पूज्यप्रवर ने 'राजा प्रदेशी' आख्यान शृंखला का समापन करते हुए कोलकातावासियों को रमणीय बने रहने की प्रेरणा प्रदान की।

तेरापंथ विकास परिषद के सदस्य श्री बनेचंद मालू, प्रवास व्यवस्था समिति की महामंत्री श्रीमती सूरज बरड़िया, आवास व्यवस्था के संयोजक श्री भंवरलाल बैद, प्रवास व्यवस्था समिति के उपाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र बोरड़, उपाध्यक्ष श्री तुलसी दूगड़, उपाध्यक्ष श्री विजय बावलिया, उपाध्यक्ष श्री हेमंत दूगड़, उपाध्यक्ष श्री नरेन्द्र बरड़िया व उपाध्यक्ष श्री नवरतनमल बोथरा, कोषाध्यक्ष श्री प्रकाश बैद, भोजन व्यवस्था के संयोजक श्री विमल दूगड़, आचार्य महाप्रज्ञ महाश्रमण एजुकेशन एंड रिसर्च फाउण्डेशन के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र दूगड़ तथा मुख्य न्यासी श्री भीखमचंद पुगलिया, चिकित्सा व्यवस्था संयोजक श्री विजयसिंह चोरड़िया, श्री नरेन्द्र

मणोत, श्रीमती शोभा दूगड़, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की ट्रस्टी श्रीमती मधु दूगड़, रास्ता सेवा संयोजक श्री अमरचंद दूगड़, श्री जयकरण बच्छावत, श्री अभिषेक दूगड़ व जैन विश्व भारती के संयुक्त मंत्री श्री मनोज दूगड़ ने अपनी मंगल भावनाओं को अभिव्यक्त किया। कार्यक्रम का संयोजन चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री विनोद बैद ने किया।

आज कोलकाता के हजारों श्रद्धालु पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। ऐसा लग रहा था कि पूज्यप्रवर के पांच माह तक कोलकाता प्रवास में श्रद्धालुओं की प्यास और बढ़ गई है। लोग चतुर्मास के अंतिम दिन जी भर कर दर्शन-सेवा का लाभ लेना चाहते थे। रात्रि में करीब ६.५० बजे से पूज्यप्रवर के चरणस्पर्श प्रारम्भ हुए तो श्रद्धालु पुरुषों की बहुत लंबी कतार लग गई। मात्र दस मिनट में सब लोग पूज्यप्रवर के चरणस्पर्श कर पाएं, यह संभव नहीं लग रहा था। पूज्यप्रवर ने अनुग्रह कर सात बजने में करीब एक मिनिट शेष रहते चरणस्पर्श के समय को कुछ समय के लिए बढ़ा दिया। जब कतारबद्ध लोगों को इसकी जानकारी हुई तो वे खुशी से झूम उठे। पूरा 'महाश्रमण सभागार' 'जय-जय ज्योतिचरण, जय-जय महाश्रमण' के निनाद से गूंज उठा। पूज्यप्रवर के कोलकाता चतुर्मास के दौरान भरपूर सेवा का लाभ लेने वाले सैंकड़ों-सैंकड़ों श्रद्धालुओं के मन आज मायूस बने हुए थे। आगामी कल होने वाले पूज्यप्रवर के विहार की कल्पना मात्र से ही उनकी आंखें नम हो रही थीं, हृदय में भावनाओं का ज्वार उमड़ रहा था। बरबस उनके मुंह से यही स्वर प्रस्फुटित हो रहा था--'चतुर्मास इतना जल्दी पूरा हो गया, अब हम क्या करेंगे।'

चतुर्मास के दौरान गुरुकुलवासस्थ साधु-साध्वियों की तपस्याएं

सात या उससे अधिक दिन की तपस्या

मुनि प्रिंसकुमारजी	- पन्द्रह दिन।
मुनि पुनीतकुमारजी	- अठाई।
साध्वी विशालप्रभाजी	- मासखमण (३१ दिन)
साध्वी मल्लिकाश्रीजी	- पन्द्रह दिन।
साध्वी भावितयशाजी	- पन्द्रह दिन।
साध्वी स्वस्तिकप्रभाजी	- ग्यारह दिन।
साध्वी सुदर्शनप्रभाजी	- सात दिन।

एकान्तर तप

मुनि कोमलकुमारजी	- चार मास।
मुनि आलोककुमारजी	- दो मास।
साध्वी कमलविभाजी	- दो मास।
साध्वी मुदिताश्रीजी	- दो मास।
साध्वी परमप्रभाजी	- दो मास।
साध्वी प्रमिलाकुमारीजी	- एक मास।
साध्वी चित्रलेखाजी	- एक मास।
साध्वी विभाश्रीजी	- एक मास।
साध्वी अनुशासनाश्रीजी	- एक मास।

साध्वी शीतलयशाजी - एक मास।
साध्वी सविताश्रीजी - एक मास।
साध्वी दर्शनविभाजी - एक मास।
साध्वी सुदर्शनप्रभाजी - एक मास।
साध्वी विशालयशाजी - एक मास।
साध्वी चैतन्यप्रभाजी - एक मास।
साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी - एक मास।

चतुर्मासकाल में श्रावक-श्राविकाओं में भी तपस्या का क्रम अच्छे रूप में चला। १६-२६ अगस्त तक कोलकाता में चार ग्यारहरंगी हुईं। इसके साथ एक सप्तरंगी और पचरंगी भी हुई। चतुर्मास के प्रारम्भ से पूर्व आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी से पूज्यप्रवर की प्रेरणा के फलस्वरूप तेलों का क्रम रखा गया, जिसमें करीब ६५२ तेले हुए। इसके साथ श्रावण-भाद्रपद मास में उपवास की ५१ बारियां भी हुईं।

स्मृति-संबल

- बीदासर निवासी पटना प्रवासी श्री पूनमचंद बैंगानी (सुपुत्र स्व. फूसराज बैंगानी) निधन हो गया। वे सहज, सरल एवं धर्मनिष्ठ श्रावक थे। प्रतिदिन प्रवचन श्रवण एवं यदा-कदा सामायिक किया करते थे। अग्नि परीक्षा के समय चूरू में उन्होंने अपनी सक्रिय सेवाएं दी थी। समाज के सभी वर्गों के साथ उनका अच्छा संपर्क था। उनके देहांत के बाद तीन दिनों में ही शोक संपन्न कर उनके पूरे परिवार पुरातन रुढ़ियों को प्रश्रय नहीं दिया। पूरे परिवार में संघ एवं संघपति के प्रति अच्छी आस्था है।
- चूरू निवासी राऊरकेला/कोलकाता प्रवासी श्री छत्तरसिंहजी बोथरा (स्व. लिखमीचन्द बोथरा) का देहावसान हो गया। वे प्रतिदिन सामायिक एवं स्वाध्याय में रुचि रखने वाले श्रावक थे। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन एवं उपासना का क्रम रखते थे। अपने प्रवास क्षेत्र के आसपास विचरण करने वाले चारित्रात्माओं के रास्ते की सेवा में संलग्न रहते थे। अनेक सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी के रूप में अपनी सेवाएं देते हुए वे चूरू तेरापंथ भवन के ट्रस्टी थे। पूरा बोथरा परिवार श्रद्धाशील परिवार है।
- लाडनूं निवासी भयंदर प्रवासी श्री भंवरलालजी चोरड़िया (सुपुत्र स्व. जयचंदलाल चोरड़िया) कालधर्म को प्राप्त हो गए। वे धर्मपरायण श्रावक थे। उन्होंने पूरे परिवार में धर्म के संस्कार संक्रान्त किए। मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी एवं साध्वी मुदितयशाजी क्रमशः उनकी संसारपक्षीय बहिन तथा भाणजी हैं। उनकी धर्मपत्नी धनसुखी एवं दोनों सुपुत्र धर्मसंघ के सक्रिय कार्यकर्ता हैं। चोरड़िया परिवार श्रद्धाशील परिवार है।
- राजलदेसर निवासी चैन्नई प्रवासी श्रीमती संतोष दूगड़ (धर्मपत्नी श्री ललितजी दूगड़) का निधन हो गया। प्रायः सामायिक-माला आदि एवं द्रव्यों की सीमा का उनका नित्य क्रम था। करीब पन्द्रह वर्षों तक फेंफड़े की बीमारी से होनेवाली वेदना में उन्होंने समत्व का परिचय देते हुए अपने मनोबल को कमजोर नहीं होने दिया। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- रामगढ़ निवासी श्रीमती प्रेमलता छाजेड़ (धर्मपत्नी श्री छत्रसिंहजी छाजेड़) का देहावसान हो गया। बचपन में प्राप्त धार्मिक परिवेश का प्रभाव उनके पूरे जीवनकाल तक रहा। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी, साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी एवं साध्वी कमलश्रीजी आदि चारित्रात्माएं संसारपक्ष में आपके परिवार से संबद्ध रही हैं। प्रायः प्रतिवर्ष दर्शन, सेवा आदि का उनका क्रम रहता था। उनकी देव, गुरु और धर्म

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/15-17 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2015-2017
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

पर दृढ़ आस्था थी। अहिंसा यात्रा के दौरान वे यदा-कदा मार्ग सेवा भी करती थीं। पूरे छाजेड़ परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।

स्मारणा

- साधु-साध्वियों द्वारा गाए जाने वाले गीतों की कैसेट, सी.डी. का निर्माण अमृतवाणी के सिवाय अन्य किसी के द्वारा न किया जाए। कैसेट, सी.डी. में म्यूजिक का प्रयोग नहीं हो सकेगा।
- आचार्यप्रवर की अनापत्ति के बिना साधु-साध्वियों व समणी के गीतों की कैसेट/सी.डी. न बनाई जाए।
- गृहस्थों व साधु-साध्वियों द्वारा गाए जाने वाली एक कैसेट/सी.डी./डी.वी.डी./पेन ड्राईव व तत्सदृश आइटम्स में आचार्यों व साधुओं के गीतों के साथ साध्वियों व समणियों के गीतों का समावेश न किया जाए। एक सी.डी. आदि में कम से कम तीन साधुओं-समणों अथवा तीन साध्वियों-समणियों के गीतों का होना आवश्यक है।
- जिस सी.डी. आदि में आचार्यों के साथ अन्य साधुओं के गीत हों तो आचार्यों का नामोल्लेख हो तथा आचार्यों के गीत पूर्वानुक्रम से आएं, जैसे-पहले आचार्य भिक्षु आदि। साधुओं व पुरुष गृहस्थों के गीत हों तो गीत की आंकड़ी आ सकती है, नाम नहीं आए। संगायक का नाम आने में आपत्ति नहीं।
- सी.डी. आदि पर आचार्यों के साथ किसी भी चारित्रात्मा तथा गृहस्थों के व्यक्तिगत फोटो नहीं लगाए जाएं तथा विपरीत लिंगी के साथ साधु-साध्वी व समणी की भी फोटो न आए।
- प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान आदि के प्रयोग की सी.डी. पर तीर्थकरों व आचार्यों के सिवाय अन्य किसी भी चारित्रात्मा आदि का चित्र न आए।
- सी.डी., डी.वी.डी., कैसेट आदि चारित्रात्माओं को उपहृत न की जाए। कार्यक्रम में उनको लोकार्पित करने में आपत्ति नहीं।
- तेरापंथ के आचार्यों, केन्द्रीय संस्थाओं तथा अभियानों (अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अहिंसा प्रशिक्षण आदि) के संदर्भ में डोक्युमेंट्री फिल्म आदि बनाने से पूर्व महासभा से स्वीकृति लेनी आवश्यक होगी। केन्द्रीय संस्था स्वयं अपनी संस्था या प्रवृत्ति के बारे में बनाए तो आपत्ति नही।

(श्रावक संदेशिका धारा--१३४-१४१)

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

३१००/- स्व.भंवरलालजी सुतरिया (अड़सीपुरा, आदर्शपुरम-कामरेज सूरत) की पुण्य स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सज्जनदेवी, सुपुत्र शंभूलाल, विनोदकुमार, राजेशकुमार, बालूलाल सुतरिया परिवार द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ फोन नं-०७३८४४३९५७२, ०९७८४४०७४६१
दिल्ली कार्यालय का नं.-२३२३४६४१, ९३१०२३४६४१

●

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-९, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी